



मुम्बई (गामदेवी)। पयूचर आफ पावर कार्यक्रम सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। समूह चित्र में बैठे हुए हैं - आस्ट्रेलिया से पधारी ब्र.कु.मॉरिन, यू.के.से सराह कावानाह, एपीजे साधना स्कूल की उप प्राचार्या डॉ.राधिका खन्ना, कोरिया से प्रो.सुधी यू, अभिनेत्री सिमता जयाकर, सांसद प्रिया दत्त, लेखिका राज्यलक्ष्मी राव, केन्या से प्रसिद्ध उद्योगपति निजार जुमा, जन स्वास्थ्य विभाग की सचिव मीता राजीवलोचन, आभा सिंह, यूज एडिटर गीता आनंद, टाउ आर्ट गैलरी की निदेशिका कल्पना शाह, जसलोक हास्पिटल की डस्टी कान्ता मसंद, सोंजा ओहलसन, मैरीगोल्डगुप की सीईओ संगीता जी, ब्र.कु.निहा, आर्किटेक्ट सोनल शाह। खड़े हुए हैं - लैडमार्क ग्रुप के एमडी उदयन ठक्कर, केईसी इंटरनेशनल के एमडी रमेश चंडक, टेबनेकान हेल्थकेअर के एमडी धनराज चांदरिआनी, मुकुंद लिमि.के एमडी सुकेतु वी.शाह, जयदीप मेहरोत्रा, पी.डी.हिन्दुजा नेशनल हास्पिटल से डॉ.गस्टड दवेर, एशियन स्नूकर चेम्पियन आदित्य मेहता, एंडोस्कोपिक सर्जन डॉ.विपुल राय राठौर, एथनी फिलिप्स, चेतन रायकर, वरूण खन्ना, स्नेहल मुजूमदार, जी.एस.बैनर्जी, डॉ.संजीव कनोरिया, महेश भंसाली, नितिन किलावाला, डॉ.ई.टुरल, डॉ.अशोक मेहता, फ्रांस के मार्क फॉरकेड तथा श्याम सिंघानिया।



आबू रोड (शांतिवन)। टोल हाइवे इंडिया प्रा.लि.के प्रोजेक्ट मैनेजर सुल्तान अहमद खान को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए शांतिवन प्रबंधक ब्र.कु.भूपाल। साथ हैं हरवीर सिंह व ब्र.कु.दीपक।



भलवारी (नेपाल)। ब्र.कु.सुरेन्द्र दीदी, पूर्व मंत्री बालकृष्ण खाण्ड, ब्र.कु.परिणीता, ब्र.कु.शांति तथा ब्र.कु.दीपेन्द्र दीप प्रज्ज्वलित करते हुए।



उल्हासनगर। ब्र.कु.सोम, अमरधाम आश्रम के स्वामी अर्जुनदास, महेश सुखरामानी, पूर्व विधायक शौतल दास हरचंदानी दीप प्रज्ज्वलित करते हुए।



कोडोली (वारणा)। ऊर्जा अंकुर में तनाव प्रबंधन कोर्स कराने के पश्चात ब्र.कु.शोभा, ब्र.कु.मनीषा, जनरल मैनेजर संजीव विचारे तथा अन्य।

संस्कार प्राप्त ..

दादी रतनमोहिनी ने कहा कि ईश्वरीय शक्ति के आधार से हम संस्कारित बनेंगे और अपने परिवार को भी संस्कारित कर लेंगे। सत्य पर चलकर ही सतयुगी स्वर्गिक दुनिया का आविर्भाव होगा। आत्मिक भाव से हम सदा शांति, प्रेम और आनंद का अनुभव करते रहेंगे।

ब्रह्माकुमारीज महिला प्रभागी की अध्यक्षता ब्र.कु.चक्रधारी ने कहा कि माताएं बच्चों को उच्च शिक्षा प्रदान करना चाहती हैं मगर उनके आचरण और चरित्र के निर्माण पर अपेक्षित ध्यान नहीं जाता। चरित्र निर्माण न होने से व्यक्ति उच्च पद पर रहकर भी पतन की ओर चला जाता है। नैतिकता की ऊंचाई पर ले जाने वाली शिक्षा ही वास्तविक शिक्षा है। जब माताओं का हृदय विश्व के लिए वात्सल्य से भरेगा तो जग का कल्याण होने लगेगा। महिलाओं में यह जागृति आवश्यक है कि वे देह के भान से निकलकर यह चिन्तन लाएं कि यह देह तो मात्र चोला है और इसको धारण करने वाली हम अमर आत्मा हैं।

श्रीमती रंजना कुमार ने कहा कि व्यर्थ की बातों से मुक्त होकर ही हममें शक्ति आएगी। महिला प्रभागी की मुख्यालय संयोजिका ब्र.कु.सविता ने मंच संचालन किया।

अध्यात्म से ...

मेरे नेत्रों को, मेरे कानों को, मेरी आत्मा को, मेरी संतान एवं मेरे पशुओं को सब प्रकार तृप्त कीजिए। हे देव! मेरे साथियों को तृप्त कीजिए और मेरा कोई साथी मुझसे विमुख न हो। मेरी सभी इंद्रियां, शरीर और आत्मा तक सभी प्रकार से तृप्त व सुखी रहें। मैं सामाजिक कल्याण में जो भी कार्य करूं, सब लोग मेरा सहयोग करें और मैं भी प्रत्येक व्यक्ति के अच्छे कार्यों में सहयोगी बनूं। निश्चित तौर पर स्वस्थ तन से ही लोक सेवा हो सकती है। एक बार स्वामी विवेकानंद के पास एक युवक आया जो शारीरिक दृष्टि से बहुत कमजोर था। वह युवक चाहता था कि रामकृष्ण मिशन से जुड़कर लोक सेवा का कार्य करे। स्वामीजी ने उसकी भावनाओं को सम्मान देते हुए कहा कि आपकी इच्छा प्रशंसा योग्य है लेकिन मिशन का कार्य करने से पूर्व छः माह तक हनुमान मंदिर की व्यायामशाला में जाना पड़ेगा। जब शारीरिक दृष्टि से पुष्ट हो जाओ तो तुरंत आ जाना। वैदिक ऋषि भी हर व्यक्ति के स्वस्थ रहने की कामना करते हैं और ऐसी व्यवस्था को प्रतिष्ठित करते हैं जिससे सम्पूर्ण मानवता प्रत्येक दृष्टि से सबल हो। यह बात स्वामी विवेकानंद कहते थे कि भारत के भाल पर तिलक करने का अधिकार उसे है जिसका मन पवित्र हो और भुजाएं बलशाली हों।

आत्म-भाव रखना है सतोप्रधानता

अहंकार बहुत बुरा है, उससे कम अभिमान है। अभी-अभी मान चाहिए, मिल गया तो खुश, नहीं मिला तो बड़ा दुःखी हो जाता है इंसान कि मैंने इतना किया फिर भी मुझे मान नहीं मिला। कई बार परिवार में एक व्यक्ति ये चाहना रखता है कि अभी-अभी मेरी बात माने, उसका ये अभिमान है। जबकि सामने वाला दूसरा व्यक्ति समझता है कि अभी-अभी मान मिले तो मैं बात मानूँ। दूसरा सोचता है अभी-अभी मेरी बात मानें। वो सोचता है अभी-अभी मान मिले, तो उसकी बात मानूँ। अगर मान ही नहीं मिलता है तो मानेंगे कैसे ?

इस तरह आज की दुनिया के अंदर जो घरों में कलह-क्लेश होते हैं। उस कलह-क्लेश का कारण क्या है ? बड़ा सोचता है कि मेरी बात मानें और छोटा सोचता है कि इतना किया है, पहले उसका तो मान देवे। फिर हम माने उसकी बात। इस प्रकार के झगड़े, कलह-क्लेश, अभिमान के कारण कई घरों के अंदर, देखने को मिलते हैं। तो अभिमान भी कलह-क्लेश निर्मित जरूर करता है। अभिमान धीरे-धीरे व्यक्ति को असंस्कारी बनाने लगता है।

तीसरी जो अवस्था है देहभान की। जहां व्यक्ति हर वक्त अपने देह से सम्बंधित बातों में ही उलझा हुआ रहता है। आज मेरे देह में, हाथ में दर्द हो रहा है, मेरे पैर में दर्द हो रहा है, मेरे सिर में दर्द हो रहा है, माना भान (कॉन्सियस)। इतने देह के कॉन्सियस में है कि उसको दूसरे के दर्द की महसूसता नहीं है। अपने ही दर्द का वर्णन करते जाता है। उतना वो दर्द का स्वरूप बनता जाता है और उतना जीवन के अंदर, वो दर्द भी बढ़ता जाता है। तो देह भान, देह अभिमान और देह अहंकार तीनों ही गलत है। लेकिन तीनों में परसेंटेज है। अहंकार तो छोड़ना आसान हो जाता है क्योंकि उसकी दुःख की भोगना, हरेक इंसान करके अनुभव कर चुका है इसलिए उसको छोड़ना आसान भी होता है।

लेकिन अभिमान और भान को छोड़ना कभी-कभी तकलीफ दायक हो जाता है। बहुत तकलीफ महसूस होती है। भगवान ने आगे ज्ञान, गेय और ज्ञाता, ये कर्म प्रेरक है और करण, कर्म और कर्ता ये कर्म संग्रह है। इस तरह से इसका

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.उषा



भेद बताया है कि कर्म की प्रेरणा तीन प्रकार से हो सकती है। कैसे ?

पहला है ज्ञान, मन में उत्पन्न हुई इच्छा के रूप में। आज कोई भी व्यक्ति कर्म करता है तो उसका पहला कारण उसके अंदर से इच्छा उत्पन्न होती है कि मुझे करना है। जब इच्छा उत्पन्न होती है और इच्छा को लेकर के करता है, तो ये पहला कारण बन जाता है। दूसरा गेय वस्तु के प्रलोभन से कि ये करने से मुझे क्या मिलने वाला है। इस प्रलोभन से, वो कर्म करता है। तीसरा पूर्वाभूत भोग, जो सुख का अनुभव स्मृति के अंदर समाया हुआ है कि ये करने से मुझे सुख मिलेगा इसलिए व्यक्ति करता है। तो वो पूर्व अनुभव जो है, सुख की अनुभूति के अंदर, जो स्मृति में समाया हुआ है तो उस सुख के अनुभव को प्राप्त करने के भाव से वो कर्म करता है। कर्म करने की, ये तीन प्रेरणायें हैं, जिसके आधार पर व्यक्ति आज के संसार के अंदर कर्म करता है। इसीलिए ज्ञान, कर्म और कर्ता भी, गुणों के भेद अनुसार तीन प्रकार के हैं। अब तीन प्रकार का ज्ञान कौन सा है ? संसार के अंदर तीन प्रकार का ज्ञान है।

सबसे पहले सतोगुणी ज्ञान अर्थात् जिस ज्ञान से अनंत रूपों में विभक्त सारे जीवों में आध्यात्मिक प्रकृति को देखते हैं तो वो सतोगुणी ज्ञान है। हर एक व्यक्ति के अंदर आत्मा को देखो। जितना ये ज्ञान हमारी बुद्धि में स्पष्ट है कि सब आत्मायें हैं और सभी परमात्मा की संतान हैं, तो सारे जीवों में वह आध्यात्मिक प्रकृति को देखता है। आत्मभाव को विकसित करना ही है सतोप्रधान ज्ञान।

रजो प्रधान ज्ञान कौन सा है ? जो ज्ञान सम्पूर्ण भूतों में भिन्न प्रकार के अनेक भावों को लेकर जानता है। अर्थात् ये ऊंचा है, ये नीचा है, ये यह जाति का है, यह इस जाति का है। तो ये सम्पूर्ण भूतों में भिन्न प्रकार के अनेक भावों को लेकर के जानता है कि ये अच्छा है और ये बुरा है, ये रजोगुणी ज्ञान है। भेद को लेकर के व्यवहार में आना ये ज्ञान जब बुद्धि में है, तो ये रजोगुणी ज्ञान है।

जो ज्ञान शरीर की आवश्यकताओं को पूर्ण करने तक सीमित है और उसे सब कुछ मानकर सत्य को जाने बिगर उसमें लिप्त रहते हैं वह तमोगुणी ज्ञान है। यहां व्यक्ति देह को देखता है, देह की आवश्यकता को पूर्ण करने के लिए सब कुछ करता है। इस सीमित ज्ञान को ही सत्य माना जाने लगता है। आत्मा रूप में वह नहीं देखता है। इसे तमोगुणी ज्ञान कहा जाता है। (क्रमशः)